C.B.S.E

विषय : हिन्दी 'अ'

कक्षा : 9

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड – क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(2×4=8) (1×2=2) [10]

दहेज-प्रथा का उद्भव कब और कहाँ हुआ यह कह पाना असंभव है। विश्व के विभिन्न सभ्यताओं में दहेज लेने और देने के पुख्ता प्रमाण मिलते हैं। इससे यह तो स्पष्ट होता है कि दहेज का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। आज दहेज एक बुरे का रूप धारण करती जा रही है। इस दहेज प्रथा की बीमारी की जड़ एक तो काला धन है, दूसरे मनुष्य की लोभ की दुष्प्रवृत्ति इस कार्य को और प्रेरित करती है।

आज हमारी सरकारों द्वारा लड़कियों के उत्थान व विकास के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिनमें शिक्षा, रोजगार सहित विवाहोपरांत मदद भी शामिल है। यह सब इसलिए ताकि बेटियों के परिवारों को बेटियाँ बोझ न

लगें और लड़कियाँ आत्मनिर्भर हो सकें। दहेज लेना और देना तो कानूनन अपराध है ही। सरकार ने भी दहेज प्रथा के विरूद्ध कानून बना दिया है। आज इस प्रथा के विरोध में कई जन-जागृति अभियान चलाए जा रहे हैं। लड़कियाँ आज शिक्षित और आत्म-निर्भर होने के कारण स्वयं दहेज लेने वाले परिवार को ठुकराया रही है। आज अंतर्जातीय विवाह होने लगे हैं जिसमें लड़का और लड़की समान विचार धारा के होने के कारण दहेज के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता है। इसलिए आने वाले समय इस प्रथा का धीरे-धीरे समूल नाश हो ही जाएगा।

1. दहेज का इतिहास अत्यंत प्राचीन है यह हम कैसे कह सकते हैं?

   उत्तर : दहेज-प्रथा का उद्भव कब और कहाँ हुआ यह कह पाना असंभव है। विश्व के विभिन्न सभ्यताओं में दहेज लेने और देने के पुख्ता प्रमाण मिलते हैं। इससे यह तो स्पष्ट होता है कि दहेज का इतिहास अत्यंत प्राचीन है।

2. वर्तमान में दहेज प्रथा के लिए स्थान क्यों नहीं बचता?

   उत्तर : लड़कियाँ आज शिक्षित और आत्म-निर्भर होने के कारण स्वयं दहेज लेने वाले परिवार को ठुकराया रही है। आज अंतर्जातीय विवाह होने लगे हैं जिसमें लड़का और लड़की समान विचार धारा के होने के कारण दहेज के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता है।

3. सरकार इस समस्या को निपटने के लिए क्या प्रयास कर रही है?

   उत्तर : आज हमारी सरकारों द्वारा लड़कियों के उत्थान व विकास के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिनमें शिक्षा, रोजगार सहित विवाहोपरांत मदद भी शामिल है। इस प्रथा को रोकने के लिए सरकार ने कड़े कानून भी बनाए है।

4. दहेज लेने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर : दहेज लेने के कारण काला धन और मनुष्य की लोभ की दुष्प्रवृत्ति हो सकते हैं।

5. उपर्युक्त गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश हमें कई प्रकार की शिक्षाएँ देता है जैसे सर्वप्रथम दहेज प्रथा एक बुरी प्रथा होने के कारण सभी को इस प्रथा की रोकथाम करने के लिए प्रयास करने चाहिए। दूसरी ओर बेटियों को बोझ न समझा जाय, बेटियों को शिक्षित और आत्म-निर्भर बनाया जाय जिससे इस प्रथा का समूल नाश हो सके।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'दहेज प्रथा का भविष्य' हो सकता है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए। [1]

घरेलू, रिक्शावाला

उत्तर : एलू, वाला

ख) निम्नलिखित शब्दों के उचित उपसर्ग पहचानिए। [1]

अतिरिक्त, उपग्रह,

उत्तर : अति, उप

ग) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : [1]

निरालस, कपूत

उत्तर : निर्+आलस, क+पूत

घ) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : [1]

लिपिक, मुखड़ा,

उत्तर : लिपि+क, मुख+ड़ा

प्र. 3. निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें। [4]

1. न आचार 2. प्रत्येक गली 3. नीला है जो कमल 4. सात दिनों का समाहार

विग्रह	समस्त पद	समास
न आचार	अनाचार	तत्पुरुष समास
प्रत्येक गली	गलीगली	अव्ययीभाव समास
नीला है जो कमल	नीलकमल	कर्मधारय समास
सात दिनों का समाहार	सप्ताह	द्विगु समास

प्र. 4. निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताइए। [4]

1. धूप में बड़ी गर्मी है।

   उत्तर : विधानार्थक वाक्य

2. आप क्या काम करते हैं?

   उत्तर : प्रश्नार्थक वाक्य

3. उधर खड़े हो जाइए।

   उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

4. कदाचित आज वह नहीं आएगा।

उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

प्र. 5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए। [4]

1. कानन कठिन भयंकर भारी, घोर घाम वारि बयारी।

उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. जेते तुम तारे, तेरे नभ में न तारे हैं।

उत्तर : यमक अलंकार

3. पीपर पात सरसि मन डोला।

उत्तर : उपमा अलंकार

4. पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।

उत्तर : रुपक अलंकार

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक और पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [3×2=6]

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेजे देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था।

क) लेखिका की स्थिति अन्य लड़कियों से अलग थी, कैसे?

उत्तर : लेखिका की स्थिति अन्य लड़कियों से अलग थी क्योंकि उसे सम्मान मिला तथा अच्छी तरह पाला गया था।

ख) लेखिका के परिवार में कौन-सी भाषा जानते थे तथा किस भाषा का प्रचलन नहीं था?

उत्तर : लेखिका के परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी तथा हिन्दी भाषा का प्रचलन नहीं था।

ग) लेखिका के जन्म से पहले लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था?

उत्तर : लेखिका के जन्म से पहले लड़कियों को प्रायः जन्म देते ही मार दिया जाता था।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. लेखक लंग्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गए थे?

उत्तर : लेखक लंग्कोर के मार्ग में अपने साथियों से दो कारणों से पिछड़ गए थे -

- उनका घोड़ा बहुत सुस्त था। इस वजह से लेखक अपने साथियों से बिछड़ गया और अकेले में रास्ता भूल गया।
- वे रास्ता भटककर एक-डेढ़ मील ग़लत रास्ते पर चले गए थे। उन्हें वहाँ से वापस आना पड़ा।

2. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्द चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर : प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ-

- प्रेमचंद बहुत ही सीधा-सादा जीवन जीते थे वे गांधी जी की तरह सादा जीवन जीते थे।
- प्रेमचंद के विचार बहुत ही उच्च थे वे सामाजिक बुराइयों से दूर रहे।
- प्रेमचंद एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे।
- प्रेमचंद को समझौता करना मंजूर न था।
- वे हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला करते थे।

3. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर : छोटी बच्ची का बैलों के प्रति प्रेम उमड़ने के निम्नलिखित कारण हैं -

- छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं और अपने मालिक से दूर हैं।
- छोटी बच्ची को उसकी सौतेली माँ सताती थी, यहाँ हीरा-मोती पर भी अत्याचार हो रहा था।

4. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती क्यों थी?

उत्तर : मैना अपने मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि वह मकान उसकी पैतृक धरोहर थी। उसी में मैना की बचपन की, पिता की, परिवार की यादें समाई हुई थीं। वह उसके जीवन का भी सहारा हो सकता था। इसलिए वह उसे बचाना चाहती थी।

5. साँवले सपनों से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : साँवले सपनों से तात्पर्य लेखक की सालिम अली से जुडी दुखभरी यादों से है। सालिम अली की मृत्यु से उत्पन्न दुःख और अवसाद को लेखक ने 'साँवले सपनों की याद' के रूप में व्यक्त किया है।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [2×3=6]

मेघ आये बड़े बन-ठन के, सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली

पाहुन ज्यों आये हों गाँव में शहर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये
बाँकी चितवन उठा नदी, ठिठकी, घूँघट सरके।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़ कर जुहार की
'बरस बाद सुधि लीन्ही'
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।

क्षितिज अटारी गदरायी दामिनि दमकी
'क्षमा करो गाँठ खुल गयी अब भरम की'
बाँध टूटा झर-झर मिलन अश्रु ढरके
मेघ आये बड़े बन-ठन के, सँवर के।

1. मेघ गाँव में किस प्रकार आए?

उत्तर : मेघ गाँव में शहरी मेहमान (दामाद) की तरह सज-धजकर आए।

2. मेघ के आगे आगे कौन चल रही है? किसके घूँघट सरके और क्यों?

उत्तर : मेघ के आगमन की सूचना देने उनके आगे-आगे बयार (हवा) प्रसन्नतापूर्वक चल रही है।

नदी रूपी ग्रामीण स्त्री के घूँघट सरके ताकि वह तिरछी नज़र से मेघ रूपी मेहमान को देख सके।

3. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर : मेघ रूपी मेहमान के आने से हवा के तेज बहाव के कारण आँधी चलने लगती है जिससे पेड़ कभी झुक जाते हैं तो कभी उठ जाते हैं। दरवाजे खिड़कियाँ खुल जाती हैं। नदी बाँकी होकर बहने लगी। पीपल का वृक्ष भी झुकने लगता है, तालाब के पानी में उथल-पुथल होने लगी।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

उत्तर : 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' इस पंक्ति में कवि ने मानव प्रकृति का अति सूक्ष्म वर्णन किया है। यहाँ पर 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' नगरीय सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण जीवन से है। इन पंक्तियों के द्वारा कवि यह कहना चाह रहा है कि सभी कुछ पाने के बाद भी मानव की इच्छाएँ कभी ख़त्म नहीं होती हैं।

2. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर : बच्चे समाज का भविष्य, आईना और देश की प्रगति का एक अहम् हिस्सा होते हैं। यदि समाज के इस सबसे महत्त्वपूर्ण अंग को यदि आप उचित देखभाल और अवसर प्रदान नहीं करेगें तो

समाज प्रगति कैसे करेगा। सभी बच्चे एक समान होते हैं, उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपने आप में घोर अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

3. 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर : बच्चों की इस स्थिति के लिए समाज जिम्मेवार है। समाज को इस समस्या से जागरूक करने के लिए तथा ठोस समाधान ढूँढने के लिए बात को प्रश्न रूप में ही पूछा जाना उचित होता है। क्योंकि यदि हम इन्हें विवरण की तरह पूछते हैं तो समस्या पर कोई ध्यान नहीं देता।

4. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर : कवयित्री इस संसारिकता तथा मोह के बंधनों से मुक्त नहीं हो पा रही है ऐसे में वह प्रभु भक्ति सच्चे मन से नहीं कर पा रहीं है। अतः उसे लगता है उसके द्वारा की जा रही सारी साधना व्यर्थ हुई जा रही है इसलिए उसके द्वारा मुक्ति के प्रयास भी विफल होते जा रहे हैं।

5. कवि रसखान कृष्ण के लिए क्या-क्या न्योछावर करने के लिए तैयार हैं?

उत्तर : कवि रसखान ग्वालों की लाठी और कम्बल के लिए तीनों लोकों का राज भी त्यागना पड़े तो कवि उसके लिए तैयार हैं। नंद की गाय चराने का मौका मिल जाए तो आठों सिद्धि और नवों निधि के सुख भुलाने के लिए भी सहर्ष राजी हैं। कवि अपनी आँखों से

ब्रज के वन उपवन और तालाब को जीवन भर निहारते रहना चाहते हैं। यहाँ तक कि ब्रज की कांटेदार झाड़ियों के लिए भी वे सौ महलों को भी न्योछावर कर देंगे।

प्र.10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें। [3×2=6]

1. गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए। इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए- इस कथन का आशय यह है कि गरीबों के रहने का आसरा नहीं छिनना चाहिए। माटीवाली जब एक दिन मजदूरी करके घर पहुँचती है तो उसके पति की मृत्यु हो चुकी होती है। अब उसके सामने विस्थापन से ज्यादा पति के अंतिम संस्कार की चिंता होती है, बाँध के कारण सारे श्मशान पानी में डूब चूके होते हैं। उसके लिए घर और श्मशान में कोई अंतर नहीं रह जाता है। इसी दुःख के आवेश में वह यह वाक्य कहती है।

अथवा

2. चोर माँ की किस बात से प्रभावित हुआ?

   उत्तर : चोर लेखिका की माँ की उदारता, आत्मीयता और क्षमा से प्रभावित हुआ। वह स्वयं को चोर तथा निंदनीय मानता था उसके अंदर भी चोर था परंतु जब उसने माँ की सद्भावना को देखा तो उसके मन में अपने प्रति ग्लानि तथा माँ के प्रति श्रद्धा जाग उठी।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में संकेत बिंदुओं के आधार पर निबंध लिखिए। [10]

'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।'

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान॥

कबीर द्वारा रचित उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ है कि जिस प्रकार रस्सी के कुएँ की जगत पर बार-बार घिसने से उस पर निशान पड़ जाते हैं ठीक उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से बुद्धिहीन भी बुद्धिमान बन सकता है। सतत अभ्यास से हर कला में प्रवीणता पाई जा सकती है। किसी विषय या कला में प्रवीणता प्राप्त करने का मूल-मंत्र अभ्यास ही है। अभ्यास द्वारा असंभव जान पड़ने वाले कार्य भी संभव हो जाते है। किसी लक्ष्य तक पहुँचना हो अथवा विद्याध्ययन हो, सर्वत्र अभ्यास की आवश्यकता है। अभ्यास की आवश्यकता शारीरिक और मानसिक दोनों ही कार्यों में समान रूप से होती है। प्रतिभावान व्यक्ति भी यदि अभ्यास न करे तो वह आगे नहीं बढ़ सकता। एक विद्वान अथक अभ्यास परिश्रम से विद्वान बनता है। उसके पास कोई संजीवनी नहीं है कि वह बिना पढ़े लिखे ही विद्वान घोषित कर दिया जाता है। इसके पीछे उसका परिश्रम और अभ्यास ही है। अभ्यास के बल पर ही एकलव्य, तुलसीदास, वाल्मीकि और बोपदेव संस्कृत-प्राकृत के समर्थ वैयाकरण सिद्ध हुए। बोपदेव की कहानी प्रसिद्ध है। गुरु के आश्रम से वह निराश होकर जा रहे थे कि विद्या उसके भाग्य में नहीं है। मार्ग में उसने कुएँ के चारों ओर लगे पत्थरों पर रस्सियों के निशान देखे। बस, उन्हें यह समझ में आ गया कि बार-बार घिसने से अगर पत्थर पर निशान हो सकते

है तो, बार-बार अभ्यास करने से सफलता अवश्य प्राप्त होगी। अतः इसलिए कहा गया है कि

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान॥

समुद्र तट की सैर

मैं अपने परिवार के साथ चेन्नई घूमने गया था। वहाँ पहुँचकर हम सभी शाम के समय समुद्र-तट की सैर पर निकले। इस समुद्र-तट की बात ही निराली है। चेन्नई में चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। जब हम समुद्र-तट पर पहुँचे, तो सूर्यास्त होने वाला था। चारों ओर सुनहरी लालिमा फैली हुई थी। हल्की ठंडी हवा चल रही थी। समुद्र की लहरें उछल-उछलकर तट की ओर आतीं और उसे छूकर वापस चली जातीं। मछुवारों की नावें भी तटों की ओर लौट रही थी। समुद्र तट पर चारों ओर लोगों का मेला लगा हुआ था। बच्चे-बूढे सभी समुद्र की लहरों का आनंद उठा रहे थे। कुछ लोग वहीं कुछ बच्चे और उनके माता-पिता रेत के घरौंदें बनाने में मशगुल थे। फलों की चाट, नारियल पानी, पानी की बोतलें, खाने-पीने के अन्य सामग्री बेचने वालों का शोर चारों और गूंज रहा था। मेरे पिता हमें इस सारे शोरगुल से दूर अपेक्षाकृत एक शांत कोने में ले गए। उस शांत शांत पर पहुँचकर हम सबने सबसे पहले प्रकृति की सुषमा का आनंद उठाया। उसके बाद मैं और मेरी बहन पानी को एक दूसरे पर उचल-उछालकर अत्यधिक प्रसन्नता महसूस कर रहे थे। मेरी बहन ने बहुत-से शंख और सीपियाँ इकट्ठे किए, सबने मिलकर नारियल पानी का आनंद लिया। समुद्र तट की यह सैर मेरे लिए जीवन भर के लिए यादगार बन गई।

मनोरंजन का महत्त्व

हर मनुष्य को मनोरंजन प्रिय होता है। मनोरंजन का इतिहास बहुत पुराना है। उसका संबंध मनुष्य की सभ्यता के साथ जुड़ा हुआ है। मनोरंजन के साधन कहीं न कहीं सामाजिक व्यवस्थाओं से प्रभावित था। मध्यकाल में विविध अवसरों पर आयोजित होने वाले मेलों का खास महत्त्व होता था। आज के आधुनिक युग में मनोरंजन के अनेक साधन विकसित हुए हैं। जैसे-जैसे वह सभ्य होता गया, वैसे-वैसे मनोरंजन के नये-नये साधनों की खोज होती गई। जैसे टेलिविज़न, चलचित्र, रेडियो, नाटक, नौटंकी, संगीत, नृत्य, डिस्को, हास्य रस गोष्ठी, कवि सम्मेलन, जादू, सर्कस, मेला, खेल से मनोरंजन आदि। ऐसे में संगीत, नृत्य आदि मनोरंजन के सबसे अच्छे साधन है।

दिनभर कार्य करने से शारीरिक थकान के साथ-साथ मानसिक थकान भी हो जाती है। इसके अलावा लगातार कार्य करने से आदमी कार्य से उकता जाता है। थकावट व उकताने से निजात पाने के लिए मनोरंजन के साधन होना जरूरी हैं। मनोरंजन मनुष्य को स्फूर्ति और ऊर्जा देते हैं। जीवन में ताजगी भरता है। विचारों तथा सोच को सकारात्मक पक्ष देता है। रूचि के अनुसार लोग मनोरंजन के साधनों का उपयोग करते हैं। शहर को जो साधन प्राप्त हैं, वे गाँव वालों को नहीं।

मनोरंजन के बिना मनुष्य का जीवन नीरस और रंगहीन हो जाएगा। मनोरंजन कुछ समय के लिए ही ठीक है, अगर आप इसके ज्यादा आदि हो गए तो समय भी व्यर्थ हो सकता है।

प्र.12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. आप अपने घर से दूर में रहने आए है, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में लिखिए।

   रामदेवी छात्रालय,

   सुभाष मार्ग,

   नागपुर।

   दिनाँक- 22 फरवरी 20xx

   आदरणीय माताजी

   सादर प्रणाम।

   मैं यहाँ ठीक हूँ। आशा करती हूँ, आप सब वहाँ सकुशल होगे।

   आप सबको छोड़कर पहली बार अकेली रह रही हूँ। मुझे आप सभी की बहुत याद आती है। पहले दो-तीन दिन जरा भी मन नहीं लगा परंतु अब बहुत-सी लड़कियाँ मेरी सहेलियाँ बन गई है। यहाँ के शिक्षक भी बहुत अच्छे है। कपड़े धोना, बिस्तर लगाना, सभी वस्तुएँ ठीक जगह पर रखना मैं सीख रही हूँ। मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ रही हूँ।

   पिताजी को मेरा प्रणाम और छोटी को प्यार देना।

   तुम्हारी लाड़ली

   मीना

अथवा

2. आपके क्षेत्र में सड़कों पर बहुत अधिक पानी जमा हो जाता है, क्योंकि अधिकांश सड़कें टूटी हुई हैं। जगह-जगह 'स्पीड ब्रेकर' यातायात में सहायक न होकर बाधक बन गए हैं। परिस्थिति की पूर्ण जानकारी देते हुए नगर निगम के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

   सेवा में,

   मुख्य अधिकारी,

नगर निगम,

नई दिल्ली।

विषय - अपने क्षेत्र की सड़कों की दुर्दशा हेतु पत्र।

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं विजय नगर का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में अधिकांश सड़कें टूटी हुई हैं। सड़कों पर गड्ढे हो गए है, जिसमें पानी भर जाने की वजह से मच्छर बढ़ने की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। सड़क दुर्घटना भी बढ़ने लगी है।

आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीध्र ही आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

किशोर कत्याल

28, नटेशन स्ट्रीट,

विजय नगर,

नई दिल्ली।

दिनाँक- 15 अप्रैल, 20xx

प्र. 13. निम्नलिखित किसी एक विषय पर संवाद लेखन करें। [5]

1. दो स्त्रियों के बीच पानी की समस्या को लेकर बातचीत पर संवाद लेखन लिखिए।

   राधिका : अरे ! सोहन की माँ सुनती हो?

   मधु : हाँ बोलो।

   राधिका : आज फिर पानी नहीं आया।

   मधु : हाँ, यह तो रोज का ही रोना हो गया है।

   राधिका : हम मोहल्ले को मिलकर नगरपालिका ऑफिस में शिकायत

करनी चाहिए।

मधु : तुम सही कह रही हो।

राधिका : आज में सेक्रेटरी साहब से कहकर मीटिंग बुलवाती हूँ।

मधु : हाँ, सब मिलकर कुछ समाधान निकाल लेंगे।

राधिका : चलो बहन, फिर मैं सेक्रेटरी साहब से बात कर आती हूँ।

मधु : अच्छा, ठीक है।

अथवा

2. महिला और मोची के मध्य हो रहे संवाद लिखिए।

महिला : सुनिए ...

मोची : जी, देवीजी।

महिला : मेरी सेंडल टूट गई है, जरा बना देंगे?

मोची : मेरे हाथ में एक काम है उसे पूरा करना है। वह साहब अभी आते ही होंगे।

महिला : तो कितना समय लगेगा।

मोची : आधा घंटा।

महिला : तुम पक्का बना दोगे तो में आधे घंटे बाद आकर लेकर जाऊँगी।

मोची : हाँ, आप निश्चिंत रहिए आधे घंटे में बन जाएगा।

महिला : ठीक है पर क्या दाम लोगे?

मोची : 30 रु.

महिला : 25 रु. दूँगी

मोची : ठीक है।

महिला : आती हूँ।